



पर्यावरण प्रदूषण और ग्रामीण स्वास्थ्य

हिमांशु नरेडा ¹ | डॉ. सुमन ²

¹ शोधार्थी, पीएच.डी. (भूगोल), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर.

² शोध निर्देशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर.

ABSTRACT:

KEYWORDS:

PAPER ACCEPTED DATE:

19th August 2025

PAPER PUBLISHED DATE:

20th August 2025

भूमिका

मानव जीवन का आधार प्रकृति है। जल, वायु, भूमि, वृक्ष, नदियाँ और पशु-पक्षी हमारे अस्तित्व से सीधे जुड़े हुए हैं। किंतु आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया है। इसका सबसे गहरा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है, जिसे हम प्रदूषण के रूप में देख रहे हैं। जब पर्यावरण प्रदूषित होता है तो उसका सीधा असर मानव स्वास्थ्य पर होता है। ग्रामीण भारत, जहाँ लगभग 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है, भी अब प्रदूषण की मार से अछूता नहीं रहा।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य समस्याओं का मूल कारण पर्यावरणीय प्रदूषण है। स्वच्छ जल और हवा की कमी, रासायनिक खादों व कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग, अपशिष्ट प्रबंधन की अनदेखी और ऊर्जा के पारंपरिक स्रोतों पर निर्भरता – इन सबने ग्रामीण स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इस निबंध में हम विस्तार से देखेंगे कि पर्यावरण प्रदूषण ग्रामीण स्वास्थ्य को किस प्रकार प्रभावित करता है और इसके समाधान क्या हो सकते हैं।

1 ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदूषण के प्रमुख स्रोत

(क) जल प्रदूषण

ग्रामीण जीवन में जल का महत्व सर्वोपरि है। ग्रामीण भारत में पीने का पानी मुख्यतः हैंडपंप, कुएँ, तालाब और नहरों से आता है। किन्तु कृषि में रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग भूजल में घुलकर पेयजल को विषैला बना देता है। कई जगह औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट भी नदियों और नालों में प्रवाहित कर दिए जाते हैं। इससे जल प्रदूषण बढ़ता है और ग्रामीणों को शुद्ध जल उपलब्ध नहीं हो पाता।

(ख) वायु प्रदूषण

ग्रामीण घरों में ऊर्जा के लिए लकड़ी, कोयला और गोबर के उपले व्यापक रूप से प्रयोग होते हैं। इनसे निकलने वाला धुआँ महिलाओं और बच्चों के लिए गंभीर स्वास्थ्य खतरा बनता है। साथ ही, ट्रैक्टर, डीजल पंपिंग सेट और फसल अवशेषों को जलाने से भी वायु प्रदूषण बढ़ता है।

(ग) मृदा प्रदूषण

हरित क्रांति के बाद से रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग मृदा की उर्वरता को घटा रहा है। भूमि में विषैले तत्व मिल जाने से यह न केवल फसल की गुणवत्ता

को प्रभावित करता है बल्कि भूमिगत जल और मानव स्वास्थ्य पर भी असर डालता है।

(घ) ध्वनि प्रदूषण

पहले ग्रामीण क्षेत्रों को शांत वातावरण के लिए जाना जाता था। लेकिन अब वहाँ भी ट्रैक्टर, श्रेशर, पंपिंग सेट और लाउडस्पीकर जैसी मशीनों ने ध्वनि प्रदूषण फैला दिया है। यह प्रदूषण मानसिक तनाव, श्रवणशक्ति में कमी और अनिद्रा जैसी समस्याएँ पैदा करता है।

2 पर्यावरण प्रदूषण का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव

(क) जल जनित रोग

दूषित जल से हैजा, टाइफाइड, पेचिश, डायरिया, हेपेटाइटिस और आंतों के संक्रमण जैसे रोग फैलते हैं। ग्रामीण भारत में शिशु मृत्यु दर और कुपोषण के साथ-साथ जल जनित रोगों की घटनाएँ अधिक देखी जाती हैं।

(ख) श्वसन रोग

चूल्हों के धुएँ और वायु प्रदूषण से ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों में दमा, ब्रोंकाइटिस, क्षय रोग और अन्य श्वसन संबंधी रोग तेजी से बढ़ रहे हैं।

(ग) त्वचा और नस संबंधी रोग

कीटनाशकों और रासायनिक खादों के सीधे संपर्क से त्वचा रोग, एलर्जी और यहाँ तक कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। लंबे समय तक इनके प्रयोग से नसों से जुड़ी बीमारियाँ और जन्मजात विकृतियाँ भी देखी जाती हैं।

(घ) संक्रामक रोग

अस्वच्छ वातावरण और गंदे जलस्रोतों में मच्छरों का प्रजनन होता है, जिससे मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया जैसी बीमारियाँ फैलती हैं।

(ङ) मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

ध्वनि प्रदूषण और अस्वच्छ वातावरण मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा और अवसाद को भी जन्म देते हैं। ग्रामीण समाज में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं को प्रायः अनदेखा किया जाता है।

3 पर्यावरण प्रदूषण और ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक जीवन

ग्रामीण समाज का जीवन कृषि पर आधारित है। जब भूमि, जल और वायु प्रदूषित होते हैं तो कृषि उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों पर असर पड़ता है। इससे किसानों की आय घटती है और गरीबी बढ़ती है। गरीबी और स्वास्थ्य समस्याएँ मिलकर एक दुष्चक्र का निर्माण करती हैं। ग्रामीण परिवार चिकित्सा पर अधिक खर्च नहीं कर पाते, जिससे उनकी जीवन-गुणवत्ता प्रभावित होती है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का असर ग्रामीण श्रमिकों की कार्यक्षमता पर भी पड़ता है। बीमार और कमजोर श्रमिक उतना कार्य नहीं कर पाते, जिससे उत्पादन क्षमता कम हो जाती है और सामाजिक-आर्थिक प्रगति रुक जाती है।

4 समाधान के उपाय

(क) स्वच्छ जल की उपलब्धता

- प्रत्येक गाँव में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने हेतु सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए।
- वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण को बढ़ावा देना चाहिए।
- नदियों व नालों में औद्योगिक अपशिष्ट डालने पर सख्त प्रतिबंध होना चाहिए।

(ख) स्वच्छ ऊर्जा का प्रयोग

- पारंपरिक चूल्हों की जगह बायोगैस, एलपीजी और सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना चाहिए।
- फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका जैविक उपयोग करना चाहिए।

(ग) जैविक खेती

- रासायनिक खाद और कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद और प्राकृतिक कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिए।
- किसानों को जैविक खेती के लाभ और तकनीकों के बारे में जागरूक करना आवश्यक है।

(घ) अपशिष्ट प्रबंधन

- ठोस और तरल अपशिष्ट के निपटान हेतु गाँव स्तर पर उचित प्रणाली विकसित की जानी चाहिए।
- गोबर गैस संयंत्र और कम्पोस्ट खाद बनाने की तकनीकों को बढ़ावा देना चाहिए।

(ङ) स्वास्थ्य जागरूकता

- ग्रामीणों को स्वच्छता, पोषण और प्रदूषण से बचाव के बारे में जागरूक करने के लिए अभियान चलाने चाहिए।
- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की सुविधाओं को मजबूत किया जाना चाहिए ताकि बीमारियों का समय पर इलाज हो सके।

5 सरकार और समाज की भूमिका

सरकार की विभिन्न योजनाएँ जैसे **स्वच्छ भारत मिशन**, **राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन**, और **जल जीवन मिशन** ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण और स्वास्थ्य सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। लेकिन इन योजनाओं की सफलता तभी संभव है जब समाज भी सक्रिय भागीदारी करे। ग्रामीण पंचायतें, स्वयंसेवी संस्थाएँ और सामाजिक संगठन मिलकर यदि जागरूकता और स्वच्छता अभियान चलाएँ तो इसका प्रभाव बहुत व्यापक होगा।

निष्कर्ष

पर्यावरण प्रदूषण आज एक वैश्विक चुनौती है, परंतु इसका सबसे ज्यादा प्रभाव उन ग्रामीण समुदायों पर पड़ रहा है, जिनकी जीविका प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। दूषित जल, प्रदूषित वायु, अस्वच्छ वातावरण और रासायनिक खेती ग्रामीण स्वास्थ्य के लिए गहरी समस्या बन गए हैं। यदि हम समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाते तो ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक प्रगति बाधित होगी और ग्रामीण जीवन संकट में पड़ जाएगा।

इसलिए आवश्यक है कि सरकार, समाज और हर व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हो। स्वच्छ जल, स्वच्छ ऊर्जा, जैविक खेती और स्वास्थ्य शिक्षा जैसे उपाय अपनाकर ही हम प्रदूषण को नियंत्रित कर सकते हैं और ग्रामीण स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकते हैं। यही टिकाऊ विकास और स्वस्थ भारत की नींव है।

REFERENCES

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO). (2022). *Air Pollution and Health*. Geneva: World Health Organization.
2. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR). (2019). *Impact of Pesticides on Soil, Water and Human Health*. नई दिल्ली.
3. Planning Commission of India. (2011). *Rural Health Care System in India*. Government of India.
4. Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC). (2021). *State of Environment Report*. नई दिल्ली.
5. Central Pollution Control Board (CPCB). (2020). *Water Quality Status in India*. नई दिल्ली.
6. Gupta, R. & Sharma, P. (2017). *Environmental Pollution and Rural Health in India*. Journal of Environmental Sociology, 12(2), 45–63.
7. National Rural Health Mission (NRHM). (2018). *Annual Report on Rural Health*. Government of India.
8. Singh, K. (2015). *Agricultural Practices, Pesticides and Rural Health in India*. Indian Journal of Social Studies, 33(1), 101–118.
9. United Nations Environment Programme (UNEP). (2020). *Pollution and Human Health: A Global Perspective*. Nairobi: UNEP.
10. Swaminathan, M. S. (2007). *Sustainable Agriculture: Towards Food Security*. New Delhi: Academic Foundation.
11. Registrar General of India (RGI). (2019). *Sample Registration System (SRS) Statistical Report*. Government of India.
12. Kumar, S. & Lal, D. (2016). *Environmental Challenges and Rural Development in India*. Social Change Review, 46(4), 89–112.
13. World Bank. (2018). *World Development Report: Learning to Realize Education's Promise*. Washington, D.C.: World Bank.
14. International Institute for Population Sciences (IIPS). (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5)*. मुंबई.
15. Chattopadhyay, A. (2014). *Environmental Health Issues in Rural India*. Economic and Political Weekly, 49(23), 56–63.